प्रति Future Study on line. —

डा. विजयनाथ
ज्योतिषाचार्य
2F, St. 11, Zone I
Bhilai, Durg (C.G.)

(लेख)

सामाजिक जीवन

मानव की उत्पत्ति का इतिहास बहुत पुराना है। सभ्यताओं के अनुसार सामाजिक जीवन में परिवर्तन हुए हैं और होते रहेंगे। मानव का सामाजिक जीवन से गहरा सम्बन्ध है, वैसे तो इस संसार में प्रत्येक जीव का अपना सामाजिक जीवन रहता है अपनी सभ्यता रहती है, अपनी संस्कृति रहती है। सभ्यता चाहे वह धार्मिक हो या सांस्कृतिक सामाजिक जीवन को सिखाने का कार्य करता है।

यह सर्वविदित है कि मानव जब पृथ्वी पर आया तो अकेला था परन्तु अकेले वह क्या कर सकता, अपनी जीवनयापन करने में दिक्कत महसूस हुआ, दूसरों की सहायता की जरूरत पड़ने लगी और यहीं से वह संगठित होने लगा, कबीलों के समूह बनने लगे इसी के बल पर वह अपनी रक्षा करने में सफलता हासिल किया, और धीरे-धीरे एक समाज की स्थापना हुयी यहीं से सामाजिक जीवन की कला का ज्ञान हुआ। यह बात सही है कि इसी माध्यम से वह अपने समाज, समूह का विकास करना सीखा। आज जो भी परिवर्तन हुये हैं वह सामाजिक जीवन का ही देन है।

महान दार्शनिक अरस्तू ने बहुत ही सरल भाषा में बात कही कि "मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है" कहने का अर्थ यही कि बिना समाज वह चहुँमुखी विकास नहीं कर सकता, क्योंकि सामाजिक जीवन में रहने के लिए रोटी, कपड़ा, मकान की आवश्यकता पड़ती ही है अकेले नहीं हो पायेगा।

हमारी सभ्यता, हमारा धर्म शास्त्र भी मानव हित के लिए सामाजिक जीवन जीने के लिए बहुत कुछ कहा तथा ज्ञान के माध्यम से हमेशा उठाने का प्रयास किया। जैसा कि भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेद है। वेद से ही हमें अपने धर्म और सदाचार का ज्ञान प्राप्त होता है। हमारी पारिवारिक सामाजिक, वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं के स्रोत वेद ही है। जब हम वेदों की ओर देखते है तो जितनी भी सभ्यता विशेषकर भारतीय वह वेदों से ही प्राप्त है। वेदो के जो छः अंग है, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द तथा ज्योतिष। इन्हें षड्-वेदांगों की संज्ञा दी गयी है। इससे सिद्ध होता है कि सामाजिक जीवन की उन्नति के लिए ज्योतिष भी प्रमुख है।

मानव की सम्पूर्ण जीवन-चर्चा गर्भ से लेकर मृत्युतक तथा बाद की जीवन भी ज्योतिष जैसे विषयों से जुड़ा प्रश्न है। इसलिए इसे वेद की आंख माना गया है। महर्षि पाणिनी के अनुसार 'ज्योतिषामयनं चक्षुः' तो आप सोचिए कि बिना नेत्र का मानव जीवन सम्भव है क्या ?, नहीं कृषि, व्यापार, उद्योग, यज्ञ, सदाचार, धर्म व्यवस्था, रहन-सहन तथा जीवन की सम्पूर्ण यात्रा हेतु नेत्र (ज्योतिष) की आवश्यकता पड़ेगी ही, चाहे वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष माने या न मानें। ~~इस~~

किसी ने सही कहा 'मनुष्य अपना भविष्य जानने की इच्छा उतना ही पुरातन है जितना कि मनुष्य

'To know the future has been the greatest ambition of man'

इसी कड़ी में विश्व में प्राणिमात्र के जीवन का स्तर अनन्त ब्रह्मांड के प्रकृति प्रभाव पर ही

अवलम्बित है। 'यद ब्रह्माण्डे तत्पिण्डे' यह सिद्धान्त और भी मानव जीवन स्तर पर ग्रह नक्षत्र का प्रभाव पड़ता ही है।

आज वर्तमान समय की ओर चले या विचार करे तो स्वरूप कुछ बदला नजर आता है। शायद यह भूल कर रहे हैं कि समाज का अस्तित्व ही मानव के सामाजिक जीवन का आधार है। परन्तु समाज के प्रति क्या कर्तव्य हैं भूलते नजर आ रहे हैं, वह संयुक्त परिवार में रहना पसंन्द नहीं करता, स्वार्थ की भावना ने अपना जगह बना लिया और हम तेजी से बढ़ते भी नजर आ रहे हैं। शायद वह यह भी भूल रहा है कि वह जो भी उन्नति करता है उसमें समाज का ही नाम आता है। अतः समाज मनुष्य का प्रतिबिम्ब है। आज जो भी उन्नति है वह विज्ञान की देन है लेकिन हमें अपने धर्म, संस्कृति, आदर्श, सदाचार को भी ध्यान रखना होगा ताकि चहुँमुखी विकास हो सके तथा —

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। का पूर्णतया चरितार्थ हो।

डॉ. विजयनार्थ
ज्योतिषाचार्य
2F, St. 11, Zone I, Bhilai
Durg (C.G.)